अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2024) दिनांक : 18.12.2024

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

लघु दण्डक–30

प्र. 1 कोई चार द्वार लिखें– 24

(क) अवगाहना द्वार में–प्रथम चार नारकी तथा देवता की अवगाहना लिखें।

(ख) स्थिति द्वार में–तीन विकलेन्द्रिय व तिर्यंच पंचेन्द्रिय तक लिखें।

(ग) लेश्या द्वार।

(घ) च्यवन द्वार।

(ड़) योग द्वार में–सात नारकी से अंत तक लिखें।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) पांच स्थावर में संस्थान का विवरण।

(ख) वेद द्वार–सर्वार्थसिद्ध देवों तक।

(ग) अज्ञान द्वार

पांच ज्ञान–30

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान के प्रकारों का विवेचन करते हुए प्रतिबोधक दृष्टांत लिखें।

(ख) सम्यक्श्रुत मिथ्याश्रुत दूसरी दृष्टि से लिखें तथा श्रुत के समुच्चय रूप से चार प्रकार लिखें।

(ग) वर्धमान अवधिज्ञान तथा हीयमान अवधिज्ञान लिखें।

(घ) संज्ञी श्रुत व असंज्ञी श्रुत के प्रथम दो प्रकार की व्याख्या करें।

(ड़) अवधिज्ञान के दो भेद की व्याख्या करें तथा अवधिज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान अंतर लिखें।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) केवलज्ञान के दो प्रकार लिखें।

(ख) मनःपर्यवज्ञान से क्या जाना जाता है?

(ग) प्रत्येक बुद्ध की उपाधि कितने प्रकार की होती है?

(घ) अक्षरों की संयोजना से होने वाले ज्ञान को क्या कहते हैं?

(ड़) पांच ज्ञान में क्षयोपशम जन्य ज्ञान कौन से हैं?

(च) द्वादशांगी का प्रतिपाद्य क्या है? वह किस दृष्टि से अन्तरहित है?

(छ) मतिज्ञान शब्द के स्थान पर किस शब्द का प्रयोग भी होता है?

(ज) अवधिज्ञानी सब भावों के अनंतवें भाग को ही क्यों जानता देखता है?

गीतिका–गुणस्थान दिग्दर्शन–10

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) चार घाति कर्मों का क्षय निष्पन्न भाव किन गुणस्थान में होता है?

(ख) नौंवे गुणस्थान में कितने कषाय क्षीण होते हैं? इसका उल्लेख किस आगम में है।

(ग) दसवें गुणस्थान तक कितने व कौन से कर्म का बंध होता है?

प्र. 6 कोई दो पद्य भावार्थ सहित लिखें– 8

(क) आयुबंध.....कहीजे रे।

(ख) मोहकर्म.....समाधो रे।

(ग) देश मोह.....मांही रे।

(घ) खपक-श्रेण.....जाचो रे।

पूर्ण कंठस्थ ज्ञान–30

प्र. 7 निम्नांकित सभी प्रश्नों के उत्तर दें–

(क) पच्चीस बोल–प्राण–छठा ***अथवा*** दण्डक–सातवां 1

(ख) चतुर्भंगी–पन्द्रहवां बोल ***अथवा*** निर्जरा के बारह भेद 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–सत्रहवां बोल ***अथवा*** बीसवां बोल 3

(घ) तत्त्व चर्चा–पुण्य धर्म आदि एक है या दो ***अथवा*** छह द्रव्यों पर छह में नौ की चर्चा। 3

(ड़) प्रतिक्रमण–मारणांतिय संलेहना ***अथवा*** अभ्युत्थान सूत्र 2

(च) कर्मप्रकृति–ज्ञानावरणीय कर्म बंध के हेतु ***अथवा*** वेदनीय कर्म की स्थिति। 4

(छ) जैन तत्त्व प्रवेश–लोकालोक द्वार ***अथवा*** हेय ज्ञेय उपादेय द्वार। 3

(ज) बावन बोल–बाईस परीषह किस कर्म के उदय से ***अथवा*** पन्द्रह योग कितने भाव। 4

(झ) इक्कीस द्वार–तेजोलेश्या ***अथवा*** चक्षुदर्शनी। 4

(ञ) जैन त त्त्व प्रवेश–पुण्य पाप द्वार ***अथवा*** उपांग बारह लिखें। 3